वार्षिक रिपोर्ट

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्

2001-2002

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्
(पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार की एक स्वायत्त परिषद्)
देहरादून

वार्षिक रिपोर्ट

2001 - 2002

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्

(पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार की एक स्वायत्त परिषद्)

देहरादून

संरक्षक
श्री रविन्द्र पाल सिंह कटवाल
महानिदेशक
भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्
देहरादून

प्रकाशित :
मीडिया एवं प्रकाशन प्रभाग
विस्तार निदेशालय द्वारा
भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्
देहरादून के लिये प्रकाशित

संकलन एवं सम्पादन :
एस.सिंग्सिट, आई.एफ.एस., डी.डी.जी. (विस्तार), आई.सी.एफ.आर.आई.
डा0 वी.एन. सिंह, आई.एफ.एस, ए.डी.जी. (मि.एवं प.),आई.सी.एफ.आर.आई.

प्रक्रमण :
डा0 वी. जीवा, वैज्ञानिक–बी

मार्च 2002

मुद्रण : माईक्रोसॉफ्ट टैक्नोप्रिन्ट ई0 प्रा0 लि0, देहरादून

आवरण :
मुख्य पृष्ठ – कच्छवनस्पति वन
अन्तिम पृष्ठ – एरमोस्टैकीस सुपरवा

प्राक्कथन

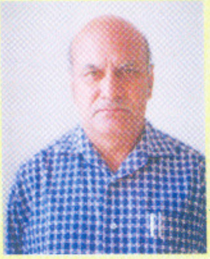

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् राष्ट्रीय वानिकी अनुसंधान प्रणाली में एक शीर्ष संस्था है। परिषद् आनुवंशिक एवं जैव–प्रौद्योगिकीय अनुसंधानों, निम्नीकृत भूमियों के जैव–प्रत्युपाय, वन उत्पादों के सक्षम उपयोग, जैवविविधता के संरक्षण और वनों के नाशी जीवों एवं रोगों के एकीकृत प्रबंध द्वारा वन उत्पादकता सुधारने तथा वनों के वैज्ञानिक प्रबंध सुनिश्चित करने के लिए वानिकी के सभी पहलुओं पर अनुसंधान, शिक्षा एवं विस्तार की आयोजना, प्रोत्साहन, संचालन और समन्वयन करके राष्ट्रीय स्तर पर वानिकी अनुसंधान के विकास के लिए प्रयासरत है।

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् के लिए वर्ष 2001–2002 एक ऐसी अवधि थी जब विश्व बैंक सहायता–प्राप्त वानिकी अनुसंधान, शिक्षा और विस्तार (फ्रीप) परियोजना पराकाष्ठा अवस्था में थी, जो अन्तिम रूप से 31 दिसम्बर, 2001 को समाप्त हो गयी। अनुसंधान की गुणवत्ता एवं मात्रा बढ़ाने के लिए फ्रीप के अन्तर्गत सुव्यवस्थित दृष्टिकोण अपनाया गया तथा वैज्ञानिकों को आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए वांछित अवसंरचना सृजित की गई ताकि बदलें में इनकी क्षमताओं को बढ़ाया जा सके। देहरादून में राष्ट्रीय वानिकी पुस्तकालय एवं सूचना केंन्द्र ज्ञान के अत्यधिक समृद्ध स्रोत के रूप में विकसित हुआ है और यह अनुसंधान, शिक्षा एवं विस्तार के क्षेत्र में परिषद् के गुणवत्ता उत्पादन में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहा है। सूचना प्रौद्योगिकी प्रकोष्ठ (आई टी सैल) ने परिषद् के संस्थानों में आठ भारतीय वानिकी अनुसंधान सूचना प्रणाली मॉडयूल्स अभिकल्पित एवं परीक्षित किए।

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् ने वर्ष के दौरान विभिन्न परियोजनाओं के अन्तर्गत व्यापारिक रूप से महत्वपूर्ण प्रजातियों, के क्लोनीय प्रवर्धन के लिए विभिन्न पैकेजों का विकास किया, समस्या मृदाओं के सुधार हेतु प्रजातियों की पहचान की, निर्माण एवं अन्य उद्देश्यों के लिए उपयुक्त कुछ गैर–परम्परागत काष्ठ प्रजातियों की जांच की, कुछ व्यापारिक रूप से महत्वपूर्ण औषधीय पादपों के लिए खेती पैकेजों का विकास किया, कुछ बांस प्रजातियों के लागत प्रभावी सूक्ष्म प्रवर्धन खोजे, विभिनन कृषि पारिस्थितिकी क्षेत्रों के लिए कृषि वानिकी मॉडल सृजित किए, वन उत्पादों के विकल्प की पहचान की, विभिन्न वन उत्पादों में उपयोगिता परिवर्धन किया और महत्वपूर्ण वन प्रजातियों के एकीकृत नाशीजीव प्रबंध का विकास किया।

देश में वानिकी शिक्षा प्रदान करने वाले विश्वविद्यालयों को, इनकी अवसंरचना को मजबूत बनाने और इनकी शिक्षण एवं अनुसंधान क्षमताओं को बढ़ाने के दृष्टिकोण से, वित्तीय सहायता उपलब्ध कराकर वानिकी शिक्षा को प्रोत्साहित किया गया। व.अ.सं. सम विश्वविद्यालय के वानिकी विद्यार्थियों की वानिकी शिक्षा की गुणवत्ता और नियोजन पर अधिक जोर दिया गया। परिषद् ने ऐसे विश्वविद्यालय शिक्षकों को भी प्रशिक्षण देना शुरू किया है जो विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में वानिकी विषय पढ़ा रहे हैं।

विस्तार के क्षेत्र में, प्रौद्योगिकियों का क्षेत्र में प्रसार करने के लिए सुव्यवस्थित प्रयास किए गए। दस प्रसिद्ध संस्थानों, जो वानिकी से सम्बन्धित व्यवसायों में प्रशिक्षण से किसी भी तरह नहीं जुड़े थे, को विस्तार सहायता निधि परियोजनाओं के तहत सहायता देकर इस विशेष कार्य के पक्ष में किया गया और अब इन्होंने परिषद् के सैटेलाइट प्रशिक्षण केन्द्रों के रूप में कार्य करना शुरू कर दिया है। प्रौद्योगिकियों के प्रचार के लिए 15 डाक्यूमेन्ट्री को विडियों कैसेटों पर तैयार किया गया, जिसके लिए सी डी तैयार की गई। इन्हे फिल्मों को हिन्दी और क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवादित किया गया।

वैज्ञानिकों एवं अधिकारियों के मनोबल को बढ़ाने हेतु ताकि वे अपने क्षेत्र में विशिष्टता दिखा सके, तत्काल मान्यता देने की एक प्रक्रिया को सुदृढ़ बनाया गया और वर्ष 1999, 2000 और 2001 के लिए 'आई सी एफ आर ई कैश अवार्ड' प्रदान किए गए। मुझे यहां यह उल्लेख करते हुए गर्व महसूस हो रहा है कि वर्ष 2000 और 2001 के लिए पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार का प्रतिष्ठित विशिष्ट वैज्ञानिक पुरस्कार परिषद् के वैज्ञानिकों को प्रदान किया गया। मुझे विश्वास है कि ये अवार्ड वैज्ञानिकों एवं अधिकारियों को, अपने से सम्बन्धित क्षेत्रों में अपनी ऊर्जा लगाने के लिए प्रेरित करने में लम्बा रास्ता तय करेंगे और आने वाले वर्षों में इससे बेहतर परिणाम मिलेंगे।

मुझे भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् की वार्षिक रिपोर्ट 2001–2002 प्रस्तुत करते हुए खुशी हो रही है, जिसमें वानिकी अनुसंधान, शिक्षा और विस्तार के विविध कार्यकलापों को दिया गया है। मुझे आशा है कि यह रिपोर्ट नीति–निर्माताओं, आयोजकों और विकास एजेन्सियो और उन सभी के लिए उपयोगी होगी जिनकी वानिकी में साझेदारी है।

देहरादून

(रविन्द्रपाल सिंह कटवाल)
महानिदेशक
भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् का संगठनात्मक चार्ट